श्रीगणेशायनमः

अथ चोथमलविलासलि:

जिनेश्वर चरण शरण तेरी ॥ हरो भव भ्रमण गइन फेरी ॥टेक॥ सुनों जगदीश ईश मेरे ॥ गहली सदा शरण तेरे ॥ हरो वसु कर्म जाल फंदा ॥ भरी निज शिव सुख आनंदा ॥ दोहा॥ तुम दयाल हम दीन हैं शरण गही कर जोर ॥ भवद-धि पार उतारियो। प्रभु जाचुनहिं कछु और ॥ हरो सकल स-व पाप पुंज ढेरी जिनेश्वर ॥ प्रभु मुख चन्द्र रूप सोहे ॥ भव्य-मन देखत ही मोहे ॥ दरसते भव आप भाजे ॥ स्पर्श ते सुख नि-धि हो राजे ॥ दोहा॥ भक्तन के मन कुमुद को करो प्रफुल्लित आप॥ धर्मामृत वर्षा करो प्रभु हरो हमारे पाप ॥ करो मत प-लभर की देरी ॥ जिनेश्वर २॥ जिनेश्वर सूर्य रूप भासे ॥ पाप [illegible] ॥ ज्ञान निज घट २ में भासे ॥ भव्य मन देख त उल्लासें ॥ दोहा॥ रवि को कमल अनेक हैं कमलन को र-वि एक॥ हमसे कमल अनेक को प्रभु तुमसे दीन कर एक ॥ अरज सुन करुणा कर मेरी॥ जिनेश्वर ३ ॥ प्रभु तुम त्रिभुव न के स्वामी· तरण और त्यारण हो नामी ॥ चोथमल चरण· न शिर नावे॥ स्तोत्र पढ प्रभु गुण को गावे॥ दोहा॥ महा मंत्र तव नाम को जपे सुरों चित लाय इह भव सब सुख भोगके ॥ प्र भू परभव मुक्ति जाय कट सब करमन की वेरी ॥ जिनेश्वर ४ भव नाशन कारण जहां जग मान सहेली॥ तिन भरे पुन्य भंडा र ज्ञान धन थैली ॥ टेक॥ ज्यो श्रावक सहेली संग जिनेश्वर पूजे भव २ ॥ के पातक तिन्हे देष कर धूजे ॥ जो भक्ति युक्त-

सहेली में जिन गुण गावे ॥ वह स्वर्ग संपदा लहे मुक्ति पद पा वे ॥ इस पंचम काल मंझार मुक्ति की गैली ॥ भव २ जे भव्य अष्टमी चौदस के व्रत धारे ॥ वसु द्रव्य लेय प्रति मंदिर मांहि पधारें ॥ जिन पूजन सहेली संग करें जे ज्ञानी ॥ तिनके फल लव से मुक्ति महारानी ॥ शुभ कर्म उदय से कीरत तो जग में फैली ॥ भव तारन २ जे सहेली में पद विनती प्रभु की गावे ॥ वे भव २ में जिन भक्ति निश्चय पावे ॥ निज पुत्र मित्र पुत संपति सुख को धारें फीर परंपरा से शिव पुर मांहि पधारें ॥ यो कहे चौथमल जग में किरती रहे सौभ २

ढाल नागजी की सोरठा २

जग जन मंगल कार म्हारा चेतन जी विघन हरन आनंद करणा न ओचरणा शिर धार म्हा० ॥ आदि नाथ जगदीश सो १ ॥ सहेली में मन लाय म्हा० ॥ मुक्ति पंथ गैली यही सहज मुक्ति मिल जाय म्हा० ॥ निज पर का उपकार कर २ गंचा गुण धार म्हा० गुण व्रत शिक्षा व्रत धरो ॥ अतिचार को टार म्हा० ॥ श्रावक प्रतिमा को लखो ३ ॥ सच्चा कुल मर्याद म्हा० ॥ देव धर्म गुरु शास्त्र में तजहु अष्ट विघमान म्हा० ॥ ज्ञान ध्यान चारित्र धर ४ ॥ हिंसा झुट निवार म्हा० ॥ चोरी पर रमणी तजो श्रावक के व्रत धार म्हा० ॥ परिग्रह में परिमाण कर ५ प्रति मंदिर में जा य म्हा० सहेली संग पूजा करहु भजन विनती गाय म्हा० ॥ फीर जिन में मन लाय के ६ ॥ जिन मत में मन लाय म्हा० ॥ निज मन को चौथमल कहे सकल कर्म कट जाय म्हा० इस भव पर भव सुख लहे ७ ॥ प्रभु जिन वर स्वामी भव दधि पार उतारियो ॥ टेक ॥ प्रभु मैं हूं अधम अनाथ नाथ पापी घणो प्रभु अधम उधारण नाम रावरो म्हे सुण्यो ॥ प्रभु शरण गही में

आप सहाय मेरी करो॥ प्रभु हरो पाप के पुंज पुन्य निधि से भरो॥ परहां मेरे कर्म शत्रु को चूर चतुर्गीते टारियो २॥ प्रभु मैं मा यामें फस्यो काम खोटे किये॥ प्रभु राग द्वेष अभिमान वसे मेरे हिये॥ प्रभु मैं माया मैं पाप कर्म नित ही करूं॥ पर हां दीन जान के सेवग वेग उतारियो २ प्रभु अंजन से भी के इ अधम उधारिया प्रभु चांडाल यम पालादिक को त्यारिया प्रभु चोथमल की अरज प्रभु सुण लीजिये प्रभु भव २ में मोय प्रीति जिन भक्ति दीजिये परहां षेवट पावन सहेली जहाज उवारियो॥ ३॥

गज़ल ५

जिनेश्वर देव के दर्शन सदा कल्याण कारी है॥ दिगंवर मूर्ति पद्मासन नाशका दृष्टि धारि है छवि कोट रवि ददूल को स कल दुध्यान हारी है २ पुन्य पीयुष भव्यन को चिदानंद कंद भारी है॥ हरो वसु कर्म शत्रु को चोथ मल शरण थारी है॥ जिनेश्वर २

प्रभुजी जग जन मंगलकारी मूरत सोहै अद्भुत पारी॥ टेक॥ पद्मासन धर ध्यान लगाये नासा दृष्टि धारी अष्टक कर्म के नष्ट करन कूं आति दु हरल पधारी १ राग द्वेष तज साम्य भाव धरी। भरी मुक्ति सुभ नारी केवल ज्ञान संपदा युत हो अनंत चतुष्टय धारी प्रभुजी २ ध्याना रूप अति प्रवल अग्नि ते भवा ताप सब जारी॥ चोथमल को चरण शरण की भक्ति द्यो अघ हारी ३१

होजी हो म्हाराजा स्वामी थे तो म्हाने त्यारोजी म्हाका राज। टेक॥ टूटी नाव समद वीच झूलो अशरण करू पुकार खेव दिया बन बाहु गहो प्रभू वेग उतारो पार होजी हो १ थे तो दीनानाथ छोजी मैं हूं दीन अनाथ शिव पुर मोही पठायज्यो प्र भु तुम हो शिव पुर नाथ हो २ राग द्वेष मद मोह महारिपु

दूर करो तत्काल चोपमल कूं वेग उबारो अपने चोर दरबारा ॥

ढाल ।।पी।। ८

जय जय ईश्वर श्री जिन चन्द्र हरो सकल जग जन को फंद ॥टेक॥ शिव सुखदायक जगबिच नायक भक्त सहायक आनंद कुंद ॥ जय॰१॥ करुणा सागर जग उद्धारक अनि उपकारक चन्द अमंद जय २॥ भव तारण वसु कर्म विदारण अशरण शरण सुरा सुर वंद जय जय॰३॥ वीतराग सर्वज्ञ निदानंद अजर अमर शोभित स्वछंद ४॥ चरन कमल की भक्ती चाहत इन्द्र लाल और मोती चंद जयजय ॥५॥

जिन वर प्रभू के दर्शन करिके आनंद उर में छाया है॥ जैसे दीन पुरुष को भी सम्यक् दर्शन कहते हैं पाप ताप संताप हरण को चरण सब गहते हैं जिन दर्शन बिन विभ्रम जग में प्रभाव न प्रतिभासत हैं ॥आज्ञानि शाहरा के जग में तत्व समत प्रकाशत है॥ चिदानंद निज ज्योति रूपमय घट२ ज्ञान उजासत है याते मुख्य मुख्य धर्म यह दरदरा जैन शास्त्र में गाया है॥ जैसे दीन २॥ जैनीजन कूं अवश्य चाहिये दरसन कर आहार करे जा दिन अंतराय दरसन का वा दिन भोजन नांय करे मार्ग में ज्यो मंदिर आवे कर दर्शन आगे कूं चले बिन दर्शन उस जैनीजन को पेंड २ पर पुन्य जले याते जैनीजन को चहिये बिन दर्शन नहिं पेंड बढ़े पराधीन निज भावो से प्रणाम कर फिर पेंड बढ़े याही सनातन जैन धर्म की चोपमल ने गिरनाया है ॥२॥

मुनि और श्रावक के धर्म की लावणी

रतन त्रय निज धर्म सनातन श्रावक को करना चाहिये॥

देव गुरु जिन शास्त्र भक्ति धर कर्म शत्रु हरना चहिये १॥ देश
श्रावक और मुनि धर्म भेद तें २ प्रकार लखना चाहिये।
जीवादिक श्रद्धान ज्ञान को दर्श ज्ञान कहना चाहिये॥ पंच
महाव्रत समिति पांच और गुप्ति त्रय धरना चाहिये॥ क्षु
धा तृषादिक महा परीसह मन वचतन सहना चहिये वर्षा
ऋतु में स्वच्छ शिला पर स्वच्छ ध्यान धरना चाहिये शीत
काल जल तीर ग्रीष्म में महा ताप सहना चहिये निश्चय से
निर्ग्रंथ मुनि को मुनि धर्म लखना चहिये देश० २॥ अर्हन भ
गवान आदि सनातन निज का ध्यान धरना चहिये वीतरा
ग सर्वज्ञ चिदानंद आमनाय शरना चाहिये राग द्वेष तज भ
ये दिगंबर तिनको गुरु कहना चाहिये ॥ भवानी श्री जिन
वाणी का शरणा नित चहना चहिये तीन मूढ़ता गर्व ८ छै
अनायतन हरना चाहिये॥ अष्ट अंग युत दृढ़ श्रद्धानी ज्ञानी
हो रहना चहिये सम्यक दर्शन प्रथम रत्न यह घट में नित ध
रना चहिये २॥ अधिक न्यूनता रहित ज्ञान को सम्यक ज्ञान
कहना चहिये प्रथम करण और चरण द्रव्य यह नियोग नित
पढ़ना चाहिये निरतिचार चारित्र विकल नित श्रावक को
करना चहिये अणु गुण शिक्षा पांच ३ ॥ और च्यार भेद
धरना चाहिये कृत कारित अनुमोद अहिंसा मन वच तन
धरना चाहिये दुख हार कोमल परोपकारक सत्य वचन क
हना चहिये॥ चोरी और पर नारी तज के परिग्रह प्रमाण क
रना चहिये॥ दिग व्रत अनर्थ दंड व्रत धरके। ५ मा॥ दक
करना चाहिये॥ भोगोपभोग का प्रमाण करके सामायक
धरना चहिये॥ देशावकाशिक प्रोषधादिक खैया व्रत ध
रना चहिये॥ भक्ति युत श्री जिनवर की पूजन नित करना—

चाहिये॥ राग द्वेष तज महावली हो समा भाव धरना चाहिये श्रावक की प्रतिमा एकादश क्रम से सुन करना चाहिये ४॥ सदा काल सब प्राणी मात्र से मित्र भाव धरना चाहिये॥ अति गुण ज्ञ साधर्मी देखकर प्रमोद नित करना चाहिये॥ दुःखी दीन जन देख तिन्हों पर करुणा नित करना चाहिये॥ दुराग्रही अति दुष्टजनों पर साम्य भाव धरना चाहिये नित्य चिदानंद निर्विकार निज आत्म रूप रटना चाहिये निजात्म रूप में कहै चौथमल मन लगाय सुनना चाहिये॥ ५॥

लावणी २१

गृही निज चरण शरण तेरी नेम प्रभु अरज सुणो मेरी॥ टेक॥ नेम प्रभु तोरण जब आये॥ जंगल में अति छाये॥ दीन अरु मृग ही घबराये॥ भक्ति धार प्रभु गुण को गाये॥ दोहा॥ समुद विजय के पुत्र जी सुनो नेम महाराज जीवदान बकसो हमें प्रभु दया धर्म के काज करो मत पल वर की देरी गृही-१॥ अरज तिर्यन्च सभी ज्यों करी॥ नेम के कारण जाय परी॥ अहो हम अधर्म क्यों लेवै॥ आप पे अनाथ क्यों देवै॥ दोहा॥ धिक २ संसार को जिसमें कछु न सार॥ विषय भोग महा रोग को तजे सो पैली पार॥ हृदय में जिन दिया हुई नेम प्रभु २ से हराकंकण खबतोर भूप सब देखत ही दौरे॥ अहो प्रभु ये मन क्या ठानी॥ खड़े सब राजा और रानी॥ दोहा॥ भूप सुणो निज चित की चलो सभी गिरनार केवल ज्ञान को धार के बरो मुक्ति नर नार मिटै भव भ्रमण गहन फेरी॥ गृही-३॥ दिगंबर मुद्रा को धारी॥ बरी प्रभु मुक्ति रूप नारी अरज राजल की सुण लीजे॥ साथ प्रभु पुर को भी कीजे॥ दोहा॥ भव्य अर्प का संग में राजुल तप धर लीन॥

अव मोय वेग उवारियो वीर दयावरो चीन्॥
शरणातेरी॥ नेम प्रभु ४॥

ग़ज़ल १२

चलो नर नार दर्शन को खुल्या दरबार जिनवर का॥ टेक॥
मंदिर शिर मोर पोके रच्या मंडल महोत्सव का॥ विभूतिख
च्छ भूषित है भरला सामान्य जग भर का १॥ यही है सार भव
वनमें शरन का स्थान सुरनर का दुरीतम्हा ध्वात हरने को य
ही सुप्रकाश दिन कर का २ चौथमलदास [illegible] करै
करै उत्साह शिव घर का॥ दया मय धाम भव्यन को रक्षक है
चराचर का॥३॥

ग़ज़ल १३

विषयों के वसी भूत हुवा भव वन में फिरता हूं
उवार तेरे चरण गिरता हूं॥ तेरे
रखता हूं॥

ग़ज़ल १४

हे जिन जगदीश प्रभु अरज़ी सुण मेरी॥ [illegible] महा दुख
टार हरो भव फेरी १॥
॥ कैसे नहिं अरज़ करूं खड़ो अब द्वारे— महा अधम अंजन
से तुम तारे हम को वेग उवार प्रभु चाकर हम थारे २॥ यही
अरज़ है नाथ तुम्हें कर जोड़ करता हूं भव २ में ज़िन भक्ति स
दा चहता हूं वसु कर्म महा
दास चौथ मल कहै भक्ति प्रभु तेरी॥

ग़ज़ल १५

रेल समान बण्या संसार देखो निश्चय ज्ञान विचार॥ टेक
पुण्य द्रव्य से टिकट इसमल [illegible] बैठक प्रभकार १॥

पराया होगा हानिरे· जीया १॥ जिस कुटम्ब को अपना जाने वो नहिं तेरा तुनाहक ठाने॥ पल में छोड़ चलेगा यम पुर करमन मानीरे· जीया २॥ शरिर पल में होय विराणा सुख संपत को थिर मत जानो ज्यों पानि में उठ बुद बुदा तुरत विलमानीरे· जीया ३॥ विषय भोग संयोग रोग सम चंचल लक्ष्मी मोहन जगमन जैसे विजली चमक दमक के तुरत लुभानिरे· जीया ४॥ बालपणा हंस खेल गमाया तरुण भया तरुणी विलमाया॥ वृद्ध भया कफ वात रोग पुन बुद्धि लुभानीरे· जीया ५॥ आयु घटे छिन २ में प्राणी भूल रह्यो कैसे अभिमानी घड़ी २ बड़ी घड़ियाल पुकारे तो उन जानीरे जीया ६॥ जो कुछ गई जान दे ताको रहि गयेल भेद तृष्णा को देव गुरु जिन शास्त्र भक्ति धर कर अभी हानीरे· जीया· ७॥ क्रोध मान माया को टारो क्षमा सौच सत संग निधारो॥ चोथमल्ल प्रभु चरण शरणा सें चीतल गानीरे· ८॥

ढाल लस्कर की· १८

[illegible] होजी श्री जिन राज॥ टेक॥ भव सागर को [illegible] मेरी काज॥ अशरण मोकूं जान के जी पार करो म्हाराज [illegible] अनुपरूप धरो जी त्रिजग मोहन काज॥ अनंत चतु[illegible]ष्टय धारकैजी होगये जग शिर ताज· म्हारा २॥ कर जोड़े की वी[illegible]नती जी सुण गरीब नवाज॥ चोथमल्ल को वेग उबारो भवदध[illegible] पैली पाज होजी हो म्हारा· ३॥

[illegible]ढाल लस्कर की १९

तुमसे लगन मेरी लागी [illegible] लगन मेरी लागी लगन मेरी लागी होजी जिन राज तुमसे लगन मेरी [illegible]जी॥ टेक॥ तुम तो जोग जग त प्राति पाल हो भवसागर के काज तुमसे १॥ [illegible] तुम तो अतुल

धाना रूढ़ वितरागी दर्शन १॥ अनि शय धारी मंगल कारी शिव सुख कारी भय हारी दर्शन २॥ शिल पथ गामी जग वि- चनामी त्रिभुवन स्वामी अघ हानी दर्शन ३॥ चोथमल्ल भ व भव टारन को भक्त गही जिन वर थारी॥ ४॥

ढाल ने॰ली॰ को २२

होणाहार संयोग मेंया निज ज्ञान भुलाया नेरे कर्मोंने मुझे कहां आय फसाया॥टेक॥ हाय कहां मेरे मात पीता सुत भ्रात कहा जाया॥ कहां कुटंब परिवार कहां धन दौलत माया होणाहार॥१॥ हाय सहायक कौन सेर दुख मन में छाया॥ हाय कहा- लग कहूं दुख दिन रात सताया॥ होणा २॥ हे कोई परम दया लु बचावे मेरी काया कर्म बली मुझे छोड़ तुजे में शरण पाया होणाहार ३॥

ढाल ने॰ली॰ को २३

मेरी अरज सुणो करतार जिनेस्वर स्वामी तुम त्रिभुवन कभर्ता र जगत विचनामी॥टेक॥ भवसागर में मुझे कर्म शत्रु लुटा है निज संपदा आत्म तत्व छुटा है॥ योंही किपो अनंता वार जग में फेरो अब सुन्यो अधम ऊधारण नाम प्रभु तेरो॥ अब चरण शरणकी भक्ति नहिं छोडूंगा जिननाम मंत्रकी संपत को जोडुंगा मुझे दीन जान के मद्दत करो गुण धामी तुम॥१॥ तुम भक्तन के प्रतिपाल दया के सागर॥ बल वीर्य ज्ञान सुख सो भीत जगत उ जागर संसार सिंधसे बाह गहो प्रभु मेरी में अरज करूं कर जोड़ तोड़ भव फेरी॥ हे॰ प॰ २॥ [illegible] कृपा करो अब मुझपे निजसेव कराड़ो॥ करो प्रार्थना तुझपे यो चोथमल्ल जिन भक्ति निज मन धामी मेरी अरज॥

ढाल होली की २४

जिन नाम मंत्र राज को जमत्यो सदा जिया ॥ टेक ॥ ऊँकार नमो-
कार जाप्य जिन किया उनही को मुक्ति वल्लभा निजगृह धर-
लिया जिन नाम १ ॥ जिसमें जिस कामना जिन जाप्य को किया
उसने उस काम को दूसही से पालिया जिन नाम २ ॥ श्वान भी
जिसके प्रभाव देव होगया मानव शरीर धार के फिर मोक्ष में
गया जिननाम ३ ॥ कामधेनु कल्पवृक्ष मंत्र है यही सुखों
सिंधु है जहान में है मोक्ष की मही जिननाम ४ ॥ सुर नर मु-
नि श्वर सभी शिव स्वाद ही पीया निज भक्त बोध मंत्र निज
मन लगा लिया जिननाम ५ ॥

ढाल गोपीचंद की २५

जीवन चाहो तो दे दो जानकी पीतमुर जानी ॥ टेक ॥ यह र-
घुवंशी रामचन्द्र की [illegible] ॥ बलसे ल्याये ॥ अ-
सुर कहाये यह क्या कुमती ठानी प्रीतम १ उभय लोक का
जो सुख चाहो तो इनकूं लेजावो ॥ रामचन्द्र के चरण कम
लमें मस्तक जाय नवावो जीपीतं २ ॥ नारायण बलभद्र
दोनूं महा पुण्य के धारी इनसे जीत सको नहिं कबहू प्रीती
करो अति भारी जीपीतं ३ ॥ अति धर्मज्ञ विभीषण भ्रात नि
नकी तुम नहिं मानी ॥ असुभ कर्म के उदय सत्य को क्यों वि
परीत लषानी जीपीतं ४ ॥ अंगद सुग्रीवादिक राजन को कर
ने है शिवकाई ॥ जाम्बवान हनुमान दास हो कैर भक्ति सिर
नाई ॥ जीपीतम ५ ॥ ज्यो कुल का तुम कुशल चाहते मानों
सिख सयानी ॥ सीताजी को भेजा चना करो बहुत भिजमा-
नी जीपीतं ६ ॥ समाचार यह राम सुनत ही तुमकूं तुरत बु
लासी ॥ अभयदान दे तुझको चक्रसे जैसे त्रिभुवन में छासी

ढाल गोपीचन्द की २८

हे जीन जगदीश प्रभु त्रिभुवन अघहारी ॥ वसु कर्मों को हेर शरणा हूं तुम्हारी ॥ टेक ॥ भव वन भ्रमत फिरो निज ज्ञान भुलायो दैव योग शुभ कर्म उदय मानुष भव पायो हे जीन २ ॥ श्रावक कुल जिन धर्म गह्यो सुद बुद मोय आई करन २ ॥ सत्संग मुझे सहेली नित्य पाई २ ॥ निश्चय श्रव तो शरणा लियेतु मही मेरे स्वामी अधम उधारण तुम समान दूजा नहीं नामी ३ ॥ निज सेवक मोय जान प्रभु तुम पार लगावो सज्जन सहेली संग सहित शिव वास बसावो ४ चोथमल्ल यो अरज करे निज भक्त मोय दीजे भव २ के अपराध सभी मेरे हर लीजे ५ ॥

ढाल गोपीचन्द की २९

तुम यह बीटी कैसे लाये कहदो सही २ मंत्री की दृष्टी कैसे छुपाई कहदो सही २ ॥ टेक ॥ तुम कैसे धोका दिया अपना मतलब बना लिया ॥ यह कैसा ज्ञान किया कहदो सही २ मंत्र को जो मैंने उनको दई है यह वोही सही यह कैसी बात भाई कहदो सही २ ॥

ढाल गोपीचंद की ३०

ऊपर को चलो यहां हया नहीं है इस गर मीं मे मुझे कहना [illegible] नहीं है ॥ टेक ॥ जहां वह महाना दिजल पाई नहीं है ॥ यह मुद्रीका कढइया हो कोई नाहि है १ ॥ अथाह जल बीटी फकी न ही ला सका कोई मंत्री तुरत बुलाय लेउ मुद्रिका हो २

ढाल गोपीचन्द की ३१

मेरा दुख दूर कर जीनवर तेरे चर्नों के शरना हूं ॥ टेक ॥ अपार सागर [illegible] चहुं मे पार तरना हूं सहारा गेक है तेरा नहीं दूजे का धरना १ ॥ तूही सर्व है स्वामी तूही सुख सौधु जग नामी

मेरी अरजी कूं सुन लीजे ॥ न मूं कर जोड़ चरणा हूं २ ॥ वली वि
सयों के फंदे से ॥ भमा माया के घेरा हूं ॥ तेरी निज भक्ति सीर ध
रके ॥ चहूं दुन से उभरना हूं ३ ॥ चोथमल दास है तेरा ॥ हरो
संसार का फेरा ॥ करूं कर जोड़ यह यह विनती ॥ चहूं व सुक
में रहता हूं ४ ॥

मलार ३२

जीयाजी ज्ञानी प्रभु पद को मत भूल ॥ टेक ॥ सीव सुख दाय
क जग विघ्न नायक निखिल सुमंगल मुल १ त्रिभुवन स्वा
मी जग विघ्न नासी धर्म वृक्ष को मूल चोथमल च रनको
चेरो भव दधि करनीर मूल जी ज्ञानी जी २ ॥

ढाल भरनी ३३

जीया सुणा जिन मत की वाणी सुकृत कर ले नाम सुमर ले
होवे निर वांणी ॥ टेर ॥ काम क्रोध मद मोह महा रिपु भव
२ ॥ दुःख दानी शील कवच धर क्षमा खड्ग से जीतो जी ज्ञानी
जी० १ ॥ दया छोड़ के शास्त्र विमुख हो मत कर मन भानि०
सत्य शौच संयम तप धर के कर ल्यो अमहानि जिया २ ॥
देव गुरु जीन वांणी का हो मच्चा श्रद्धानी ॥ रत्न त्रय युत मुनि
पद धर के वरो मुक्ति राणी ॥ जीया ३ ॥ स्त्री कुटंव और धन०
संपत सव मोह राज धानी चोथमल निज सार वस्तु इक०
जिन भक्ति ठानी जीया ४ ॥

ढाल फुलार की ३४

जीयाजी निज घट ज्ञान विचारो इस जग में कौन तुमारो ॥ टेक
॥ कहां से आये कौन वस्तु हो किस दर्वे मन [illegible] पुण्य उद
य मानुष भव पायो अन्धकूप मत डारो जीय० १ देह वि
राणी गेह विराणो धन संपत नाहिं थारो म० [illegible] सव०

धानजनोंसे मनलव कोन्यवहारे २॥ जीयाजी॥ जैसे पसी वृक्ष पीठ पर अपनी करन घुसारे रात रहै दीन मै उठजावे॥ तैसे जगन पसारे जीयाजी ३॥ अति दुस्तर संसार समद से जो चाहो निस्तारे सुकृत कर ल्यो नाम सुमरल्यो कामक्रो धमद दारे ४॥ चिदानंद सुखकंद ज्ञानमय है निजरूप तिहारे चोथमल जिन पदकी सेवा निश्चलनिजमन धारो जीयाजी ५

ढाल कुलार की ३५

सतगुरु का उपदेश सपाना भविजन नीज मन धार लेहो॥ टेर॥ हिंसा चोरी झूठ परिग्रह मन वच तनसे टार देवो देस राग मद मोह छांड़के जीव दया मन धार लेहो १॥ श्रीजिन दर्शन पूजन करके प्रतिदिन गुण गाय लेहो परउपकार अपार दान देहु र्ष हिये चित्त धार लेवो २॥ अणु गुण शिक्षा चरण मनोहर द्वादश व्रत सार है हो षोडस कारण भाय भावना रत्न त्रयपद धार लेहो ३॥ क्रोध मान मद मोह पछारन क्षमा खड्ग को धार लेहो सत्य सौच संयम तप धरके निज चिद्रूप निहार लेहो ४॥ चोथमल्ल प्रभुपद की सेवा निश्चल मन अति दृढ धार लेहो जिनवाणी जिनधर्म शरणागत स्वर्ग मोक्ष सुख पाय लेहो ५॥

ढाल कुलार की ३६

कुमति का संगन जो प्राणी कुमति है भव २ दुखदानी॥ टेक॥ कुमती ने नरकादिक ध्यावे कुमति ते सुखनिधि नहीं पावे कुमति ने रत्न त्रय जावे कुमति ने दुख बहुत पावे॥ दोहा याते कुमता नार को त्यागो सब कोई लोग सुमति नार घर लायके झीलो मन वच योग सुमत है भव २ सुखदानी

कुमति १॥ कुमतिने समक्ष्य सन आवे कुमतिने स्वर्ग नाहिं पावे कुमतिने भव २ दुःख पावे कुमतिने सुख निधि नाहिं आवे॥ दोहा ॥ सप्त विसन की मान है कुमता बड़ी हराम चतुर्थ कुमता त्यागियो पावो अविचल ठाम सुमति है सब को सुखदानी कुमती २

ढाल कुलार की ३७

जियाजी सत गुरु का उपदेश हिये बिच धार लीज्योजी ॥ टेक ॥ हिंसा चोरी झूठ परिग्रह पर रमणी अधकार व्यसन ७ मद ८ छांड़ के शुद्ध सकल व्यवहार हिये॰ १ पंचाणु व्रत तीन गुण व्रत शिक्षा व्रत शीक्षा व्रत ज्यो च्यार श्रावक की प्रतिमा एकादश शिव पुर काय इ द्वार हिये २ रत्न त्रिय जिन धर्म मनालन स्वर्ग मोक्ष सुखकार अष्टकर्म निर्मूल करने को प्रवल वीर आकार हिये॰३ कल्प वृक्ष भो र कामधेनु सम वांछित फल दातार चोथमहा जिनवर का शरणा भव २ में शिवकार ॥

ढाल त्रिताल की ३८

आनद घन सत्य वचन त्रिभुवन सुखदाई आप्रिय कठोर कु ठ बोलो मत भाई ॥ टेर ॥ देवो कर वंदमान अनुपम जिन ध र्मखान सद्गुणगण निवास स्थान यश वितान देत छाई आनद १॥ जगजन विश्वास धाम करत शीघ्र पूर्ण काम॰ कल्पतरु कामधेनु ज्यो दे वांछित फल गई आनद २ भवसागर तरण जाज मनमोहन यह मंत्र सज रत्नत्रय निज धर्म काज निधि चोथमल पाई आनद ४ अशरण भ्रमता फिर इ भव वन में पुण्य उदय अब आया है ॥

ढाल त्रिताल की ३९

भव वन नासक ज्ञान प्रकाशक श्री जिन दर्शन पाया है ॥टेर॥ नारक गति में म्हा दुःख सह वैर चिताराभव २ का तिर्यंगगति मे छेदन भेदन तापस ध्यान हु वौध सद का देव गति में भोग २ के रोग वटाया दुःखो का मानव गति में राग द्वेष वस खोया सब घर सुखो का गया जाहान हा शरण नहि ज्ञान भया नहिं निज पर का ज्या शरिर में जन्म धरा में कुटम्ब मान्याता हा घर का दायक ध्यान करु दुःख को नाका पार न पाया है भव वन २ अहो दयाल २ पाल जगत पति शरण गई अब नोर में वेगउवारो भवदुःख टारो मत डारोभव फेरीमें अ नन्त चतुष्टय धारक जिनवर जग में तो सम है नाही अनंत काल का माहा दुःखी जन मो सम भी जग में नाही शरणागत की लाज रखो अब सब दुःख दूर करो मेरे मैं तो तेरा होय चु क्या हूं यही सल्य अब मरण मेरी चोथमल्ल शिव गाय प्रभु के चरण कमल चित लाया है भव शरण ॥ ३॥

ढाल तिताल की ४०

शरण गही मैं तेरी जीने जीनेश्वर शरण गही मैं तेरी निज बाह गहो अब मेरी जीनेश्वर ॥ टेक ॥ तूही नाव खेवट या नाही समद भव रवि च घेरी करुणा करके पार लगावो करो पलक नहीं देरी जीनेश्वर २ शरणागत प्रतिपाल नाम सुन शरण चरण की हेरी सच्चा भरोसा मुझको तेरा टेक रखोगे मेरी जिनेश्वर २ शुद्ध ज्ञान मय बुद्धि हमारी करदो स्वच्छ घनेरी दास चोथमल अरज करे है हरो चतु गति फेरी जीनेश्वर ३॥

ढाल जिनेश्वर ४१

हूं लगया कर चेन पियारा ॥ टेर ॥ तू कहता मैं चन्दा कुंदनी

कहा कुटम्ब परिवार तिहारा १॥ तूंतो कहता था मेरे धन-संपत है कहा धन संपत रह्या तिहारा २॥ तूंतो कहता था मेरे हाथी घोड़े कहा घोड़े हाथी है तिहारा ३॥ तूंतो कहता था मेरे बाग महल है कहा बाग कहा महल तिहारा ४॥ तूंतो कहता था मेरे देह है तुझ बिन रह गया देह तिहारा ५॥ तूंतो कहता था मुझे काम बहुत है क्यों नहिं करते काम तिहारा ६॥ चोथमल सुन सीख सयानी पुण्य चलेगा साथ तिहारा ७॥

ढाल-लावणी ४२

यमपाल दयाको धर्म मूल दृढ़ जानी वे स्वर्गभोग के करी मुक्ति पटराणी ॥टेर॥ चांडाल यमपाल हुवा इक नामी रा-जाके घर हिंसक वृती ठानी जब स्मशान में वो हिंसा करने आया दैवयोग एक सर्प उसी को खाया वो पड़्या धरणि पर शरीर में विष छाया उसी समय एक महामुनी वहां आ-या पवन स्पर्शने होगई विषकी हानी १॥ यमपाल मुनि को देख तुरत कर जोड़्या धन्य २ मुनिराज मेरा विष तो ड़्या साकहा मुझे धर्म उपदेश करू में धारन प्रभु वेग करो मेरा भ-व सागर से तारन करुणाकर मुनि कहि धर्म जिन भाखे गुम आठ चोदश जीव मात्र मत मारो वो यहि प्रतिज्ञा मुनि सामि पह ठानी २॥ भूप वहांके एक समय किया घोषन अष्टान्हि कमें किया धर्मका पोषन मेरी प्रजामें मास कोइ नहिं पावे ज्यो पावे सो तुरत मृत्यु को पावे उसही भूपका पुत्र महाअज्ञा-नी उस भूपतिकी आज्ञा वो नहीं मानी मींढा मारके खाया वो अभिमानी ३॥ जिन धर्मी भूपति बात यह सुन लीनी-तुरत उसीके वधकी आज्ञा दीनी यमपाल फेरे वध सबके वहां रिती नहीं मारा उसको उस दिन चोदस तिथी भूपकी

चांडाल धर्म क्या जाने मेरा पुत्र है इसकारण नहीं माने· इन दोनों को समुद्र में पटकानी ४॥ चांडाल की दृढ़ही म· निज्ञा जानी सब जलदेवोने उसकी कीइ महमानी सिंघा सन रस जल के ऊपर ल्याये सब जलदेवोंने उसके मुकट नवा ये धन्य २ यमपाल धर्म दृढ धारा जिसका जस भी त्रि भुवन से विस्तारा चोथमल्ल आधार कह्या जिनवाणी ५

ढाल तिनालकी ४३

शिव मार्ग निसरणी जगमें श्री जिन वाणी है तिरी कन सुखो की खान अभय दानी ॥ टेर ॥ तिर्थंकर प्रभु निज मुख स्वच्छ उचारी सोदिव्य ध्वनि गण मुनि धारी द्वादसांग धरूपज गतमें फैली सब भव्यजनो को निरखण सुखोकी थैली फिर अंग बाह्य के भेद अनेक ही धारे पूर्वांग चूलिका जिनके नाम उचारे नहि वाद कर सके परमत के कोई मानी शिव १॥ पूर्वापर अवि रूद्ध बचन मय सोहै इन्द्रादिक सब जीवो· का मन मोहे सप्त तत्व नव पदार्थ मय अविकार ज्ञानेव विहोय रत्न त्रय पद धारी यह जीव दयाको सबसे मुख्य बतावे भव २ जान स्वर्ग मोक्ष सुख पावे कल्पवृक्ष और कामधेनु सम जग में जीव मात्र को साप क जल थल खग में थो दास चोथमल जग का भूषन जानी शीव २

ढाल तिनालकी ४४

पुण्य छांडु के पाप कार्य को कभी नहीं करना चाहिये दुलभ भव मानुष्य को पाके जैन धर्म धरना चाहिये ॥ टेक ॥ तन पच नन से जीव मात्र की हिंसा नहीं करना चाहिये केवल मूसलाद देख आपना झूट बोलना ना चाहिये विना दिपा धन किसि जी वका कभी चुराना नहिं चाहिये परनारीके भोग करणा ली–

विसय वासना नहिं चाहिये परिगृह धन धान्यादिकका प्रमा
णको करना चाहिये शुद्धभावसे चार दान को यथा शक्ति देना
चाहिये धर्मात्माजन देख दूसरा ईषान नहिं करना चाहिये श्व
नजिवका किसी जीव की कभी छुड़ाना नहिं चाहिये क्रोधयु
कहो किसिको कभी सताना नहिं सताना नहिं चाहिये बैठस
भाके बीच किसी की निंद्रा नहिं कहना चाहिये करार करके उ
सी बस्तु को फेर छुपाना नहिं चाहिये विश्वास दिखाके किसी
जीव को फिर छिटकाना नहिं चाहिये सदा सर्व दाहासी करना
चुगली खाना नहिं चाहिये वचन मनोहर जगमें अमृत पीना
और पाना चाहिये २॥ विद्या धन अति पवित्र जगमें विनय
सहित पढ़ना चाहिये विनय सहित गुरुजन की सेवा सदा का
ल करना चाहिये धर्मायतन पाठशाला में अवश्य धन देना च
हिये धन कमाय फिर खाना खिलाना जात जीमाना भी चाहि
ये दुःखित भूखित दीनजनों की आस पूर्ण करना चाहिये स
मर्थ होके आश्रत जन की रक्षा नित करना चाहिये पर उपका
र सार है जग में कभी नहीं तजाना चाहिये ३॥ ओछे नर के पा
स भले को कभी बैठाना नहिं चाहिये फ़ीजूल खर्ची काज दूर
हो दुःख भोगना नहिं चाहिये जीसका हो कुछ कारज होना उस
पर गुस्सा नहिं चाहिये चोर चुगलका देख तमासा वहां ठेरना
नहिं चाहिये जात पांत और रस्ते मोले नेक राह चलना चाहि
ये सदां काल जिन नाम जाप्य को कभी विसराना चाहिये चोथ
मल्ल जिनवर पद की भक्ति मन वचनन धरना चाहिये पुण्य
४

ढाल उमराव जी की ५६

जीनराज थारी मूरत परबली हारीहो म्हाराज स्वामीजि टेक
॥ सोभीत ध्यान रूढ़ दिगम्बर शक्ति चतुष्टय धारी कान्ति

मुनछवि शान्त मनोहर त्रीभुवन मंगलकारी होम्हाराज १
हो निखिल सुरासर पुजीत पद युग भवसागर भयहारी भ
व्यन को वांछित फल दायक अष्ट कर्म रीपुटारी होम्हाराज
२॥ ध्यानामृत रससदा पान कर अजर अमर पदधारी क्ष
मा शील संतोष ऋद्धि सेवरी मुक्ति वरनारी होजिन राज ३
॥ चोथमल्ल चरनन को चेरो चाहु भक्ति निहारी शरणागत
की लाज रखोगे तुम त्रिभुवन उपकारी होजिन राज ४॥

ढाल नागजी की ४७

सोरठा दया धर्म को धार हमारा चेतनजी धर्म दया
सम है नहीं त्रिभुवन मंगल कार म्हारा भवसागर में जहा
ज है १ मन वच तन से टार म्हारा त्रसजीवो के घात को
तजहु त्रिवीध संवार कृतकारीत अनुमोदना २ सत्यवच
न मन धार म्हारा सत्य धर्म जगसार है होजी झूंट वचन
को टार म्हारा झूंट महा दुख कार हो ३ चोरी सब दुःख
खान म्हारा कुगती नरक दानी सही चोरी तजहु सुजान
म्हारा ज्यो चाहो सुख सींघुको ४ ॥ परनारी अघकार म्हा
रा तजो संग परनार को निज पतनी सुखकार म्हारा दुख
भव परभव में सही ५ तजो परिग्रह संग म्हारा अममारा
नहीं योग्य है परिमित संग अभंग म्हारा शिवसुखदाई
है सही ६ अणुव्रत पांच प्रकार म्हारा कह्याय हीजिन
शास्त्र में स्वर्ग मोक्ष सुखकार म्हारा चोथमल जीजपे ७

ढाल लसकर की ४८

होजी हो म्हारा चेतन ज्ञानी म्हों जिन वाणी धारी म्हाका
राज ॥ टेक ॥ भव सागर में जाहाज हैजी भव्यन के सिरताज
जीयाका शरणा गहजी वोकैरे मुक्ति का राज १ जीव दया

कामूल हैजी जैन धर्म की पाज॰ २॥ जिन वाणी को देखके
जीजाय कर्म रिपु टार चोथमल तोसे कहि जिया राखोमे
री लाज ३॥

ढाल लसकर की ५९

हे भाविजन प्राणी बोलो सब जैजै श्रीजिनचंद की॥ टेर।
जिनका नाम स्मर्ण करनेसे पाप दूर होजाय म्हारा प्राणी
जिपाप दूर होजाय पुण्य होता सही स्वर्ग संपदा भोग लही
शिवकी मही हेभविजन॰ १॥ भाव सहित पूजन करनेसे क
र्म शत्रु भगिजाय म्हारा प्राणीजी कर्म शत्रु भगजाय आया
शिव पुर वस कोइ भव २ के सब पातक छीन हीमें नस हेभवि
जन॰२ जिनकी स्तुति करनेसे जगमें इन्द्रादिक गुण गावे म्हा
रा म्हारा प्राणीजी इन्द्रादिक गुण गावे पावे मोक्ष को कोइ अ
मर पद धार देवे फीर मोक्ष को हेभवजन॰ ३ जिनकी पद विन
ती गानेसे यह शची भुवन में होय म्हारा प्राणीजी यशची भु
वन में होय स्वच्छ सुखमें रहे चोथमल करजोड़ सभी सेयोक
है हेभविजन ४

गज़ल

भव २ खोटे पाप किये अबतो तजो अबतो तजो ॥ टेर॥
बाल पण खेल खोया होके जवान ग़ाफ़िल सोया अब क्यूं बु
ढापेमें रोया प्रभुको भजो १ जिनके कारण पाप किये अहो
मतलब अपना लेय अमृत तज क्यूं विष पिया प्रभुको भजो २
चोरो गति के दुःख सहते तो उनही अब पार लहे॰ ॥

गज़ल

मन खो समें भजन विन धर ध्यान ज्ञान रैन दिन जगमें विभु
ति देखके मन क्यूं भ्रमाया है ॥ टेर ॥ जग बिच सार धर्म है॰

देरनो आठ कर्म हे सुर मुनिस्वर जिसे निज शीश नाया है १
चौथमल शिरनाय कहे सब को सुनाय करना हो कर लीजिये
गोखर को पाया है २॥

गजल ५२

जिन दर्शन है भव २ सहायक श्रावक को करना चाहिये राग
द्वेश तज साम्य भाव धर जैन धर्म धरना चाहिये ॥ टेर ॥ हिं
सा चोरी झूठ परिग्रह अनरथ ही तजना चाहिये रागद्वेष तज
क्षमा भाव धर सत्य बचन कहना चाहिये श्री जिन दर्शन कर
के जिन गुण गाना भी चाहिये पर उपकार दान दे जग में द्रव्य
कमाना भी चाहिये अणु गुण शिक्षा चरण मनोहर द्वादश
व्रत धरना चाहिये षोडस कारन भाप भावना जिन पद गाना
भी चहिये धर्मात्मा जिन देख सभी कू पूण्य बढ़ाना भी च-
हिये १ क्रोध मान मद मोह सभी को जरूर ही तजना चाहिये
सत्य सौच संयम कू धर के महाव्रत धरना चाहिये व्यसन ७
मद ८ छांडके अनाचार तज हरना चाहिये अष्ट अंग युत श्रद्धा
नी होर हना चाहिये अणुव्रत गुण व्रत शिक्षा पे व्रत द्वाद
श भेद धरना चाहिये कृत कारित अनमोद आदि सामनवन्न
तन धरना चाहिये चोरी और परनारि तज के प्रमाण कू
करना चाहिये २॥ सदा सर्वदा प्राणी मात्र पै मित्र भाव धरना
चाहिये साधर्मी जन देख र के से प्रमोद नित करना चाहिये दु-
खित भुषित दीन जनों की आश पूर्ण करना चाहिये दुरात्मा
अरू दुष्ट जनों पर स्मान भाव धरना चाहिये चिदानंद निज-
ज्योती रूप मय आत्मरूप लखना चाहिये सदा काल जिन ना
म मंत्र को स्मरण ही करना चाहिये चौथमल जैन धर्म की-
भाकि सदा काल करना चाहिये ३॥

ग़ज़ल ५३

जिन नाम का भजन करो कल्याण होवेगा भव २ के किये पापो को तत्काल खोवेगा टेर ॥ जिसके प्रभाव से जीया देव रूप ध्यान धर लिया तुम ज्यो जय योग नाम को तो मोक्ष होवेगा १ यह मानव शरीर जैन कुल पाप के क्यु रहा है दूल अवतो निशंक प्रभु को भजो वसु कर्म खोवेगा २ ॥ नाम तै दुरभ गे नहीं फीर तेरा पताल गे औसर ज्यो चूक जायगा तो भव २ मे रोवेगा ३ ॥ हिये बीच ज्ञान धर दिन रैन पुन्य कर इस भव में सुख भोग के सद्गत को पावेगा ४ ॥ चोथमल कहै जिया तुझ को ज्यो कहना कह दिया नड़ा का है [illegible] सब दुख खावेगा - जिन ५ ॥

ग़ज़ल ५४

चेतर सुजान क्यूं विषयो में मोह्या है फस २ के विषयो में केई भव को खोया है ॥ टेक ॥ पाया कठीन से देह नर अब तो जीया कुछ कर्म कर जैन धर्म के बिना क्यो तन विगोया है ॥ १ ॥ यह झूटा देह गेह धन फसा रहे क्यू इनही में मन समंद बिच डाल के क्यू रत्न खोया ॥ २ ॥ धर वृक्ष में वनाय के ज्यू बैठ पक्षी आय के प्रभात उड़ जात है ज्यू गति ज्यार खोया है ३ ॥ ज्यो चाहो भव से तिरन धर लिजीये प्रभु का शरन धन्य है घट विच यह बीज बीच वोया है ४ ॥ चोथमल यो कहे अरमन अवश्य क्यू वहै धर ध्यान जिनराज का सव ध्वि मोया है ५ ॥

ग़ज़ल ५५

जीया अब चेतरे ज्ञानी कुमति मन माहि क्यू ठानी ॥ टेर ॥ तजो मद मोह भयकारी भजो प्रभू नाम भय हारी द्वेष और राग को

टारो सदा जिन धर्म को धारो धर्मो शिव मोक्ष सुख देवै पा
पके पुंज हर लेवै कर यह्य कर्म की हानी जिया १॥ जपो निज
कार शिव निधि को भरे सब रिद्धि सिद्धी को यही है मंत्र
जग मोहन करो इसही से भव धोवन धरो जिन भक्ति अवि
कारी स्वर्ग और मोक्ष सुख कारी पढ़ो जग सार जिनवानी
जिया २॥ दया है मुल जिन मत का गहो यह मार्ग शिवमग
का देवगुरु शास्त्र गुण गावो अभय पद मोक्ष को पावो.
दया के धरमी जगनामी जिनश्वर देव है स्वामी चोथमल्ल
शरण मन ठानी जिया ३॥

ढाल काफी ५६

रावण सुन सीख सयानी कहै विभीषण सुन प्रिय भ्राता
यह कुमति क्या ठानी ॥ टेक॥ सीता राणी राम चंद्र की क
रो वेग अगवानी भेट कर माफ करानी १॥ लक्ष्मण राम स
मान वीरवर ही पृथ्वी पर ज्ञानी निष्कारण मत बैर करो तु
म मानू सीख सयानी करो मत सब्द कहानी २॥

ढाल काफी ५७

उत्तर काफी भाई विभीषण अपन ही किजे रंक राम लक्ष्म
ण २ भाई उनको बस नुम किजे ॥ टेक ॥ बन चर सम बन
में जो विचरै उनको कहला दीजे भाग अपना धर लीजे १॥
अहो भ्रात उस रंक राम का द्या वाद नहीं कीजे सीता को नहीं
देउ उसको कैरे सो ही कर लीजे वाद यह तुम तज दीजे २॥
हे निर्लज्ज वात सुन लीजे शीक्षा मुझे दीजे रामण शत्रु सम
पियारा तुमतो शरण लीजे प्राण अपना मत दीजे ३॥ सु
ण विभीषण जीव बचा हो लंक पुरी तज दीजे नहीं तुम में
राम नहीं ने तो मन में यही धर लीजे राम का शरण लीजे ४॥

अहो भ्रात जब नाश काल को बुद्धि होय विरानी मैं जाता हूं शरण राम की भुजको रंक बचानी चोथमल दानी मुझे वह लंक बचानी ५ ॥

ढाल काफी ५८

थारी म्हारी करके उमर जीवन मत खोसारोजी जीया क्यू कुमति धारोजी ॥ टेक ॥ पुण्य उदय मानुष भव पायो शुभ श्रावक कुल धारोजी उत्तर अवसर पाय लीया भव दुःख निवारोजी १ काम क्रोध मद मोह लोभ मोह ज्यो है भव २ दुःख कारीजी ईर्षा राग द्वेष रिपु टारोजी २॥ इनको तजो भजो प्रभु पद को शिव सुख धारीजी २ पंचाणुव्रत ३ गुणाव्रत शिक्षाव्रत को धारोजी ३ मृदुता अनापत नमन वचनन से टारोजी २ श्रीजिन भक्ति यहे ली पुजन जिन गुण सदा उचारोजी चोथमल जिन चरण शरण गह दुःख निवारोजी ४॥

ढाल काफी ५९

अरज सुनु जिनराज हमारी ॥ टेक ॥ पद्मासन धर ध्यान लगाये नासा दृष्टि धारी अष्ट कर्म निर्मूल करन को शान्त रूप अविकारी चिदानंद भवभय हारी १ अशरण शरण दया रत्नाकर हे वसिंधु उवारी भवसागर से पार लगावो जूनी नाव हमारी गही हम शरण तिहारी २॥ इस भव वनमें भ्रमता फिरे है लख चोरासी धारी सो तुमसे अज्ञानही है हम है दीन दुःखारी हरो भव व्याधि हमारी ३॥ करुणाकर निज विरदनिके हरो विपति हमारी चोथमल चरणन को चेरो यो निज भक्ति निहारी भुवन में मंगल कारी ४॥

ढाल काफ़ी ६०

सोहै जिन मूरत सोहनी कर्म शत्रु को खोवै पापमय मल्ल पंकको धोवै त्रिभुवन जग जन मन को मोहै मोहै पद्मासन अति सोहनि १॥ जिन वर मूरत मनको मोहै सिंहासन ऊपर छवि दार त्रिभुवन के आधार भक्त को करत भवोदधि पार रत्नत्रय विराजे त्रिभुवन के विदार सोहै विराजे राजे त्रिभुवनके धनी २॥ चरण शरण ज्यो आवे भव्यजन अजर अमर पावै जिन्होंके इन्द्रादिक गुण गावै ध्यावै शान्त छवि अति सोहनी ३ चोथमल चरण शरण के हेरी मिटयो गहन चतुर्गति की फेरी कीन्ही २ अरज घनेरी नेरी मुझको द्यो भक्ति घनी ४॥

ढाल काफ़ी ६१

दीवाणजी के श्री मंदिर में उत्सव सहेली पूजन का नर नारि देखन सब आवे अनुपम सुख वहां त्रिभुनका ॥टेक॥ उन्नीसो अट्ठावन संवत् फागन सुदतीया बुधवार षोडस कलस स्वर्णमय अनुपम चढ़े मनोहर मंगलकार तीर्थंकरके जन्म समय में पुर रचना जैसे होवे मंदिर वैसेही स्वच्छ रूप धर भव्यजनोंके मन मोहे टेर चानणी विनानच दरवेजन स्वर्णमय अति छवि दार जैसे घयनभो मंडल में शोभित होकर ले विस्तार समवशरण बंगला सिंहासन रत्न जटित है सुवरनका ॥ नर २ ॥ ध्वजा छत्र चामर भामंडल चौकी भारी ठोणोथाल रजत स्वर्णमय अगणित शोभित रथ हस्ती अति स्वच्छ विशाल अनेक दर्पण स्फटिक रत्न समान निज परिणाम झलकाते है भवावली समनीच मात्रको निज २ रूप दिखाते हैं युगल पालकी विशाल शोभित

अति प्रभुत्व दरशाया है श्री जिनवर के दर्शन करके अति
प्रमोद मन छाया है जटित जवाव चहुं दिश शोभित शुभ ती
र्थनके चित्रनका दिवाण २ रचना मय मंगल सुवरणका
शुभ वशरण शोभित छवि द्वार च्यार पतोलि च्यार वापिका
मान स्थंभ चहुं दिश सार कोट ३ खाई वन भुवन शोभित
द्वादश सभा भवन श्री जिनें द्र दर्शन चहुं दिशि में स्तुति करै
जहां गणधर गनादि द्रादिक सब नृत्य करे है भावशक्ति धर
पुजन कर दिव्य ध्वनि धर्मोपदेश सुनि अति प्रसन्न सब ना
री नर शुभ भावों से दर्शन करते ही पातक नाशे भव २ का ३
इंद्र आदिक नगारखाना करै घोषणा भव्यन को दर्शन क
रने वेग पधारो पवित्र कर ल्यो निज तन को प्रति दीन पुजन
भजन शल को मन तन तन भवि कर अपार नर नारी जिन द
र्शन करके स्वर्ग मोक्ष का भरै भंडार भाव भाति से सै सब भ
वि जन मिल अति उमंग मन दरसावे लवाजमा हाथी घोड़
सज पुजन सामग्री ल्यावै प्रभावना कर पुन्य वढावै सफल
जन्म उन जीवोंका दिवाण ४ अकृति में चैत्याल य रचना
स्वर्ण मयी सोभित अनुपम भव्य जनों कूं भाव भक्ति से देख
नही होवे संयम नाभी सम जहां देव छत्र में इंद्रादिक वसु
कर्म द्रव्य धरै अति प्रमोद युत भाव भक्ति सें वहां जिन पूजन
आय करै प्रत्येक दशा अष्टोतर सत है श्री जिन मंदिर म
हा पुनीत जाहा प्रभु जिन विंव विराजै कर्म शत्रु सें करै अभी
त प्राकार ती नवन उपवन में स्वच्छ वापिका आय धरै
मानसं भ द्वार च्यारो पर जीव मात्र को मान हरै कहा लग
महिमा कहे है जिनों की सार धसा जिन शासन का नरनारी
५॥ कहै प्रमोद से सफल जन्म हुवा पूर्ण मनोरथ निज

मनका ज्यो प्रभाव वना पुण्य बढ़ावे सफल जन्म उन-
जीवोका चौथमल्ल प्रभुपद का शरणा भय मेटन है भव
वन का दीवारा ६॥

ढाल उमराव की ६२

विन धर्म जी मानुष भव मत खोवो हो सुज्ञानी ॥टेक॥ म
हा कष्ट सें नर भव पाके ज्यो प्रमाद वस खोवे । चिंतामणी-
कूं पाय कष्ट सें फ़ेकत समद विच खोवे १ स्वर्ण थाल कूं
भर रेत से अमृत सें पग धोवे रत्न फेकके काक उड़ावे ई-
न्धन मैं गज ढोवे २॥ नर भव पाके विषय भोग धर धर्म रत्न
धर क्यूं खोवे कल्पवृक्ष कों उखाड़ घर में धतूर कूं बोवे-
३॥ विसय भोग वस जे अज्ञानी धर्म रत्न कूं तज देवे चिंता
मणि कूं बेच भथिका कांच खंड क्यूं लेवे ४॥ विषय भोग
भोग में होय लपटी धर्म कर्म सब खोवे आते उनम मानु-
हस्ती दे गर्द भकू बोले वे ५॥ चौथमल्ल जग सार धर्म
को मन वच तन ज्यो धारे स्वर्ग संपदा भोग भोग के शिव-
पुर माही पधारे ६॥

ढाल उमराव की ६३

क्यों विलमें धन जोवन में जीया सो चोरे निज मन में ॥
टेक॥ धन जोवन परिवार है जी अथिर जगत के माय-
ज्यो बादल में बिजली देखन लाय हो जाय फसो मन भव
वन में १ क्यो मात पिता सुत मित्र का जी थिर संगम है
नाही जैसे पक्षी धीर रहे जी भोर होत उड़ जाय नभासा है
जी ज्यूं बदल की छाय ज्यूं घन डारे अग्नि में जीत्यूं २॥
होय सवाय विन शकर फिर जन्मै ३ गणाधर चक्री होन

हैजी धर्मरत्न कुपाय चोथमल्लजिन धर्मकोजी धारोमन
वच काय सार है त्रिभुवनमें ४॥

ढाल उमराव की ६४

धन संपत जीया चंचल है ये छोड़ो मुन २॥ टेक ॥ गणि:
का सम जग बीच हैजी सब सें रहत उदास चक्रवर्तीकूं
छाज केजी करै रंक घर वास मोहकै अवल है १॥ तीन ग
ती धन की कहे जी दान भोग और नाश दानी भोगी फल ल
हैजी होत निरास लहै दुर्गति फल है २॥ रैन दिन धनको
भैजी खावे खरचे नाय मानुष भव को पायकेजी रीती ही
रहजाय भवका यही जल है ३ धन्य धनी जग वे सही
जि धर्मकार्य धन देत स्वर्ग संपदा भोग केजी चोथमल्ल
प्रभुवल है ४॥

ढाल कुमरी ६५

ज्ञानाच हो जो मोक्ष मैंसी धे यह द्वार है ॥टेक॥ अर
हंत का भजन करो गुरु शास्त्र का धरो सेवा करोजो भक्ति
से जिन संघ च्यार है १ हिंसादि पाप दूर कर क्रोधादि श
त्रु च्यार हर करलीजिये सौजन्यता गुणा का अगार है २
गुणियों स्वच्छ संग धर इन्द्रिये पाचो वस में कर अस:
नादि दान दीजिये महिमा अपार है ३॥ तप धार भावना
भज्यो वैराग्य घर जगत जो जिन शास्त्र युक्त चोथमल
यह वीस द्वार है ज्ञानाच हो ४॥

ढाल आसावरी ६६

जिन पुजन सुखदाई जिया तो या जिन पुजन सुखदाई
वे पुजो मन वच काई ॥ टेक ॥ जिन पुजन ते भय भगजावे

न्मूर्ति नैनतम जाई इष्टमित्र परिवार संपदा जग में होत सवाई १॥ इस भव पर भव सुख संपत की जिन पद निधि जग पाई। जो नर इन्द्रादिक पद धारैं देव करत शिव जाई २। अष्ट सिद्धि नव निधि जगत में बहु विध सुजस बड़ाई सकल विभूति चक्र वर्ती को जिन पूजन तैं पाई ३॥ स्वर्ग मो क्ष का द्वार ज्ञान के गणधर गण गुण गाई। चोथमल श्री जिन पूजन को बार बार शिर नाई ४॥

लावणी ६७

जिन पूजन की अपार महिमा गणधरादि नहि पार लहै जैन शास्त्र में जिन पूजन को स्वर्ग मोक्ष का द्वार कहै ॥टेक॥ मन वच तन कर शुद्ध भविजन भाव भक्ति से जिन पूजै रोग व्याधि दारिद्र आपदा देख तेहि तिनके धूजै स्वर्ग भूमि सम होय ग्रह आगणा दासी सम लक्ष्मी रहै द्वार पूर्ण आयु व पुत्र उत्तम कुल धर भरै क्षमादिक गुण भंडार भव २ के सब पाप पुंज हर दुर्गति दुख कूं दूर करै सुख संपति परिवार बुद्धि बल पुण्य पुंज भंडार भरै अति असार संसार पार होकर नित्य मान मोक्ष गहै जैन शास्त्र १ शुद्ध भाव युत अष्ट द्रव्य से ज्यों भविजन पूजन रचावै वे नर देवांगनादि करि के स्वर्ग माहि पूजन पावै श्री जिनवर की एक बार भी भक्ति धार ज्यों करै स्तुति उस भविजन के चरण कमल मैं करै रात दिन नुति भाव भक्ति से एक बार भी करै वंदना श्री जिन की वंदनी कहो यह सम जग कर जग कीर्ति प्रसरै तिनकी अशरण शरण ज्ञान चोथमल श्री जिन चरण शरण गहै २॥

लावणी ६८

सुज्ञान जियारे मत विषयों में फसोना ॥टेर॥ पंचेंद्रिय के भोग करन की माया मोह लगोना १। विसय भोग मोहन उप

बसन इंद्रिय द्वार घसोना चोथमल इनको परिहरके शिव पुर जा सब सोना सुज्ञानी २॥

ग़ज़ल ६९

अब तो भजो प्रभु के नाम को विषयों में क्यूं फसे बेकाम को॥ टेक॥ सो बर्ष पूरी आयु का ज्यो मान है निद्रा में आयद होत आयु हान है काफी में बचपन आदि में ज्यो होत है खेलो मे वि प्ति वेम योजन खोत है उत्तम जवानि में छवी सांज्यो लई धन पुत्र स्त्री के भोगा निज मन में गई है आखिर बुढ़ापा दीमके ज्यो आत है मोह सन छूटे पुछे न कोई बात है ज्यो तुम चहो हो स्वर्ग मुक्ति धाम को बिसयो १ घड़िये पुकार के आवाज़ तुम कूं देत है ओसरन चुको नाम क्यूं नहीं लेत है एक २ पल भी जान लाखो लाल की किसको है मालूम कोन पल है काल की ज्यो जन्म मृत्यु दूर करना चाहते छल छिद्र तजके मोह क्यों ना दाहते दिन रैन सुमरण कीजिये जिन चन्द्र को इस भव में ही हर लीजिये भव फंद को शिव काज चोथी लाल कर ल्यो काम को अब तो २

ग़ज़ल ७०

प्रभु तुम दर्शन दीज्योजी मोय शरण कर लीज्योजी॥ टेक॥ तुम तो जग के तारणवारे हम है पापी दीन विचारे कृपा अपनी ही कीज्योजी प्रभु १ तुम तो हो स्वर्गन के राजा यह जग तव डा दुःख का जा मोही अपनो कर लीज्योजी प्रभु २ यो तो जग तव डो दुःख दाई जा में पाप बहत है साई या को बंधन कीज्योजी प्रभु ३॥ चोथमल्ल विषयों में भूले धर्म की चिंता में रहे फूले धर्मामृत को दीज्योजी ४॥

ग़ज़ल ७१

आपी सीख सुनो अन मोल मुख से अब इन २ बोल॥ टेक॥

वचन अमोलिक मोल है ज्यों मोती अन मोल छिपे न गज्ञनोंन के फिर बदार कूं खोल २॥ चुगलगे ज्यों अपने मन को करोन उस्का कोल विना बजाये पाप पुन्य का बजे गगन में ढोल २ रागद्वेष मय भूलो ग्रंथको सत्संगत में खोल पर उपकार दया मन धारो नाहिं लगे कुछ मोल ३॥ भूल तुम्हारी ज्ञानीने आगी रहे चतुर गति डोल चोथमल्ल जिन भक्ति धारके शिवपद गहो अडोल ४॥

गज़ल ७२

धन्य गुरु निरग्रंथ जगत में शिव सुख बतायो चिदानंद ।टेक। ग्रीषम ऋतु में तप्त बालु पै दृढ़ ध्यान लगायो वर्षा ऋतु में स्वच्छ शिलापै शुक्ल ध्यान दरसायो २१ शीत ऋतु सरिता तट ठाड़े निश्चल ध्यान लगायो च्यार घातिया कर्म नाशके नित्त निरंजन पद छायो २ बावीस परिषह को जप मम ता मोह नसायो सोडष कारण भाव भावना शुद्ध स्वरूप दरसायो ३ फल लगा शिव सुख का कारन जैन धर्म दरसायो चोथमल्ल निग्रंथ गुरू कूं मन वचन न शिर लायो ४

गज़ल

अच्छा है काम जिसका जो भलाई ॥टेक॥ धन संपत तेरी साथ न चाले रहैगी जगमें बोल भलाई १॥ भोगविलास सभी करते हैं पर कुल हरी ये होय बड़ाई २ खाय न खरचे धनकूं जोड़े तिनको जग में निफल कमाई ३ दान धर्म कर ज्ञान जीव माये तिनको जग में निफल कमाई ४ जब आगी न कूंच करेगा धर्म रहैगा तेरा भाई ५ पुत्र स्त्री परिवार कुटंबी मतलब अपने प्रीत लगाई अच्छा ६ तृष्णा भूल्यो भ्रम में डोलत्यों ना है प्रभु में प्रीत लगाई ७ चोथमल्ला जिन पद नमो सेवा भव २

तोय है सुखदाई अच्छा॰ ८॥

मलार ७४

जिनेश्वर स्वामी अरजी सुनो हो हजूर॥ टेक॥ भवसागर में॰ पूर रह्यो दुःखभय उठत हिलूर १ तस्कर कर्म धर्म धन लूटैं करिये इनकूं दूर॰ जिनेश्वर॰ २ चोथमल चरनन को चेरो शिव सुख द्यो भरपूर॰ ३॥

मलार ७५

देखो २ सुज्ञानी जियाने कल मानी विषयो में फस २ के कुम तिठानी वे॥ टेर॥ माया में रचैन ढक्यू नाने छिन नहि जान्या किया है मन माना कपट कर २ के हुये वो मानीवे १ आसा की फांसी लख चौरासी भुषत सब आये तो उन लजाये ममत धर धर के करत हानी वे २ सुख ज्यो चाहो मोहन सावो राग मद टारो दया मन धारो सकज्ञ कर २ के सुमति लानी वे ३॥ शिव सुखदानी श्री जिन वाणी चोथमल सेवो अमर पद लेवो भ जन जिनवर का कर ज्यो ज्ञानी वे ४॥

मलार ७६

जगमें भजन करवो सार॥ टेक॥ रैनादिन आनंद होवे खुलत शिवपर द्वार १॥ वसु कर्म नाशे ज्ञान भाषे त्रिभुवन आनंद कार चोथमल जिन नाम सुमरे होत भव से पार जगमें॥ २

मलार ७७

मन फसो मोह में ज्ञानी रे जिया हित अनहित नहिं जानी॥ टेक॥ लख चौरासी मोह की फांसी भव में दुःखदानी रे क्यू कुमति मन में ठानी १ ज्ञान विदारण मोह चाफ़ण करत सर्व सुख हानि रे क्यू पान करो अभीमानी २ चोथमल तोय शिवसुखदानी जग में श्री जिन वाणी ३॥

मलार ७८

जिया तजदे अभिमान कैसे हूये मतवाले ॥ टेर ॥ जन गर्भ-वास से आये अगरात दुख वहां पाये तुमको याद न आये जिया क्यूं [illegible] भाले १॥ बालपनेका हाल तुम भोग-चुके विकराल अब तो सोच समाल जिया प्रभुके गुणाकोगा ले २॥ अब जोर जवानि आवै मत कनक कामिनी भावै क्यूं कुटंब में विलमावै जिया संग न तेरे चाले ३॥ जब बुढापनु-[illegible] वेगा निरबलाई पकुआ रोवेगा सब उमर यों खोवेगा जिया खोवैगा जिया क्यूं परो पथर डाले ४ ॥ ज्यों चाहो बोल भलाई तजदो मान बड़ाई चोथमल शिरनाई जिया अपना आपा क्यूं न सभाले ५॥

मलार ७९

जिया तजो क्रोध मद मोह चहो ज्यो भवरा परा तिरणा वेक मानुष भव श्रावक कुल कष्ट कर्म हरना राग द्वेष रिपु टार-गहो श्रीजिन मत का शरणा १ ॥ पंचाणु व्रत ३ गुणाव्रत-शि[illegible] व्रत करना श्रावक की प्रतिमा एकादश मन वचन न धरना २ देव गुरू जिन शास्त्र धर्म की भक्ति नित करना जिव मात्र पर मन वच तन से दया भाव धरना ३ स्वाध्याय संयम जिन भक्ति द्वादश व्रत धरना चोथमल अष्टांग भक्ति धर प्रणामे जिन चरणा ४ ॥

मलार ८०

कर्म गत टारी नाहिं टरे लाख करो कोई जतन जगत में का[illegible] रिजनाहि सरे ॥ टेक ॥ वचन पाय दशरथ से राणी केकई कुमति धरे भरत राज वनवास राम सुन दसरथ मरणा करे करम १ ॥ राम लखण सीता संग लेके वन उपवन विचरे

गरवासे त्रिषष्ठी ज्ञानी लीना आय हरै करम २ सतउपदे श दि भीषरा देके लंकाते निकरै निज कुटंब का मृगकरराव गा नरका जायपरै करम ३ षोडशव्रत पाल व्रतधर स्व र्गाबासकरै तप धारके द्वीपायन महामुनि पदकुलभस्मक रै करम ४ अंजनसे संग पायके शिव पुरराज करै चोथ मल्लजिननाम ज्वालसुन दुखाले दूर करै करम ५॥

मल्हार ८९

नवीन मंदिर बन्या घाटमें मेला देखो नरनारी ऋषभदेव भगवान विराजे त्रिभुवनमें आनन्दकारी॥ टेक॥ सुरपुरसम जयपुर नगरीमें माधवेन्द्र श्री इन्द्र समान निज २ अपने धर्मसिहि को प्रजा सभी है देव समान जहां एक सेठ चनी लालजी कपड़े का व्यापार करै महा धनी लक्ष्मीनारायण तिनके सतचित पुण्य भरै पूर्व पुण्य के महा उदय से भई सं पदा मन मानी पुत्ररत्न हुवा जगन्नाथ जी जैन के कुल में अति दानी सहलीका धर्मोपदेश सुन श्री जिन भक्ति दृढ़ धारी १ आगरवाल संघी जगन्नाथी पंचापल ताज पुरवा जग न्नाथ जीवनाय मंदिर ऋषभदेव जिन राज धरा सम्वत् १९५८ माघ शुक्ल पाये शुभदिन श्रीमंदिर का लाडेरा सेरथसवार आये श्रीजिन अतिविभूति भूषित श्रीजिन अतिविभूति भूषित श्रीजिन का निरपोल्ये जब रथ आया जैन संघ के नरनारी सब वज्रा से भी नहीं माया हाथी घोड़े रथ पैदल सिसजी सवारी अतिभारी २॥ चौपड़ सागानेर मनोहर सेठों का ज्यों मुख्य बजार हुई सभा देन्यार अनूप मजिनकी महिमा अपरंपार अनेक बाजे बाजों की धुनि द शों दिशा में छाय रहीरथ घोड़े हाथी की सोभा भविजन मन

हरषायरही मांगानेगी दरवाजाहो धार माहि आये जिन गज भावभक्ति जैनी नरनारी जय २ ध्वनि से करे अपार अनुपम सोभा भई धार की भविजन मन आनन्दकारी ३ अंगान राम का बाग मनोहर नंदन वन सम सुखदाई डेरा मंडप वितान च दवा मेघ घटा सम घन छाई समोसरण यंगना सिंहासन रत्न जडित अनुपम सोहै ध्वजा छत्र चामर भामंडल भव्यजनों के मन मोहै दिन में पूजन भजन रात को मन वच तन भावि करै अपार नरनारी प्रभु के दर्शन कर स्वर्ग मोक्ष का भरै भंडार नाटक सभा जागरन पूजन आठ दिनां तक हुये भारी ४ ॥ नवीन मंदिर माहि विराजे जिन वर सुदि तेरस को प्रेम मगन हो जैनी जन सभ करे पान जिन गुण रस को संघी श्रीपुत जगन्नाथ जी धन्य २ सब जगत कहै धन्य २ महिमा जिन मत की स्वर्ग मोक्ष सुख धाम लहै सभा मनोहर कलस की ज्यों इन्द्र घटा सम छाय रही बहु विभूति पूत श्री जिन प्रतिमा सबके मन हर्षाय रही चोथमल मेले की महिमा कही अनुपम सुखकारी ५ ॥

मलार ८२

मेरा भोला चेतन गुण गायले २ जिनको ना भूलोरे कोई दिन प्रभू को ना भूलोरे टेर तुम ज्यो चहो हो संपत सुख को श्रीजिन के गुण गायले १ ॥ तुम ज्यो चहो हो सुरशिव सुरपुर को थिर जिन पद को नमायले २ तुम ज्यो चहो हो कर्म हटाना ममता मोह नसायले ३ जिन भक्ति कर चोथमल तू रत्नत्रय पद धार ले ॥

मलार ८३

ये तो जीया मोह में क्यू रहे जी लुभाय टेर ॥ मोह महारिपु

ज्ञान धन लूटै क्यों तुम ज्ञान रहे हो लुटाय १ मोहन चाव
ग मद टवाल रक्य क्यों तुम नाच रहे हो लुभाय २ मोहन साव
मज्यो मन चाहो प्रभु गुण गावो जी प्रीत लाय ३ जिनवर पद
तीर्थ शिव सुख देवै चोथमल शरणागही शिर नाय ४

मल्लार ८४

श्री शान्ति नाथ त्रिभुवन आधार सुण गण अगार सोहै
निर्विकार कल्याण कार जग अति उदार म्हे इन ही को शिर
झुकाना वाना वा १ टेर) सोहै शान्त रूप देवाधिदेव सुरनर
नित प्रति करत सेव गुण गण अनंत महिमा अछेव जिन
देव प्रभु के शरणा आय मन वचन काय गुण गावा गावा गावा १
जिन नाम मंत्र ते अघन शात वसु कर्म महारिपु विलय जा
त सुख स्वर्ग मोक्ष करत नवसाल दिन रात सुरासुर नमत गा
ल म्हे इन ही को नित धावा धावा धावा २ कर जोड़ अर
ज तुम से जिनेश देवो चरण कमल भक्ति हमेश चहै चोथ
मल सुर पुर अवेश त्रिभुवन नरेश नाय शीश नाय म्हे स्वर्ग
मोक्ष सुख पावा। ३।३।

मल्लार ८५

कठिन नर भान वजन पाया धर्म धर सफल करो काया॥
टेर॥ देव गति मति भुल अवधि धरै मुक्ति प्रीत उनाय वरै।
मनुज जन मन वो देव धरै अचल हो दर्धर ध्यान करै॥ दोहा
सकल समित व्रत धारके गुप्ति धरै मुनि होय अष्ट कर्म निर्ले
पकर शिव पुर पावे सोय होय वहां अजर अमर काया १॥
पाय नर काय विषय राचे मणि खो कांच खंड याचे भ्रमत है
बो लख चोरासी जीत के चौसर खो आसी॥ दोहा॥ रत्न
समद ज्यूं डारके हाथ मलै फिर रोय चिड़िया खेत को फिर

कोभवावलीसमनिज २ रूपदिखाते हैं युगलनालकी विशाल शोभित अति प्रभुत्व दरसायाहै श्रीजिनवरके दरसन करिके अति प्रमोद मनछाया हैजड़ितजड़ावसुशोभितचहुंदिशितिर्थकरके चिन्नन का ३ ॥ इदुम्यादिकनगरखाने करै घोषणा भव्यनको दर्शन करने वेगपधारो पवित्र करियोनिजतनको दिन में पूजन भजन रात को मन वच तन भावि करै अपार नर नारी सब दर्शन करकें स्वर्ग मोक्षके भरै भंडार भाव भक्तिसे सकल पंचमिल अति उमंग मन दरसावै अनेक विधिसे प्रभावना कर सहली संग जिन गुण पावै सहली संग जे पुण्य बढ़ावै सफल जन्म उनजीवन का ४ प्रतिदिन नाटक सभाजागरन भविजन करते भक्ति बढ़ाय गृह संबंध सकल कार्य तज करै स्तुति श्रीजिन गुणगाय धन्य २ उनमहाशयो को उत्सव में आते हैं पदविन्ती गावैवढ़ावै धर्मामृत बर्षाते हैं धन्य २ सब पंचजनों को जिन उत्सव में मन कीया कुबेर सम बहु द्रव्य लगा जन्म सफल अपनाकीना चोथमल प्रभु पद का सरना भय मेटन है भवननका चारसूके ५

...॥ ८७

तुम भजलो श्री जिननाम प्राणी वृथा दिवस मत खोवै॥ टेर॥ जब लख चौरासी जाया वहां विषयों में विलमाया नरमानव तन अब पाया क्यूं तनको वृथा विगोवे १ तो पर राग द्वेष दुखदाई तुम तजदो मेरे भाई क्यूं ममता तन में छाई पर परणति में मत मोहे २ ज्यो प्रभु पद को तू आवै तू अजर अमर पद पावै प्रभु चोथमल शिर नावे अविचल प्रभु भक्ति दृढ़ होवै ३॥

...॥ ८८

सुधारो जन्म ज्यो अपना तो मानू सीख यह पहले तजो अब

और सब धंधे प्रभुका नाम ल्यो पहले ॥ टेर ॥ सावरा विजली चमक के ज्यूं नभमें लपजाल ज्यूं पानीका बुदबुदा ज्यों इसा भंगुर गान नहीं यह साथ चलने का तजो मद मोह को पहले १ लाख २ के मोल की पल २ वीसरी जान करना होकर ली जिये तूं पान खोवो प्रात मनवच शुद्ध कर माथी प्रभुगुण गाय लो पहले २॥ तन धन योवन संपदा ओस विन्दु उन-हार जैसे बद्दल श्याम के विघटत लागे न वार ज्यो इनमें का मलेना है करो उपकार सब पहले ३ चोथमल सब धर्म का ज्ञान्याचहो ज्यो सार आत्म तत्व पहिचान के राग द्वेष पोटार प्रभुकी भक्ति दृढ़ धर के कर्म रिपु टार ज्यो पहले ४

लावणी ८९

जीया पीछे से तूंही पछतावे सुन ज्ञानी ज्ञानियों में क्यूं ही बि लमावे॥ टेर ॥ सुन्दर काया सपने की माया बीजरी ज्यूं तुरत नसावे १ तन धन माया बद्दल छाया धूवा ज्यों सब उड़जावे २ मात प्रात सुत तात सनेही मतलब का स्नेह दिखावे ३ चो थमल्ल ज्यो शिव सुख चाहे क्यूं नहिं प्रभु गुणगावे ४ पल पल घाड़ि ये ज्ञान सुनावे [illegible] आवे ५

लावणी ९०

श्रीजिन पार लगावो मेरी नैया ॥ टेर ॥ करुणाकर त्रिभुवन स्वामी तुमबिन और न लाज रखैया १॥ भवबन भ्रम सुनूं प शरण तेरो तुम हो जग में शरण रखैया २॥ चोथमल्ल मनवच शिरनावे हमको शिव पुर वास बसैया ॥

हजूरी ९१

श्रीजी म्हाने प्यारा लागे ॥ श्रीजिन जग सुखदाय॥ टेर ॥ शान्त छवि शोभित अविकारी स्वर्ग मोक्ष सुखदाय १

इन्द्रादिक पद पंकज पूजे ध्यावत मन वच काय २ इन्द्रादिक चरणन सिर नावे पूजत अति हरसाय ३ नो. थमल्ल जग नाथ प्रभूके ध्यावत मन वच काय ४॥

दुमरी टेर

चेतन तु जग सरायमें गाफिल क्यों सोया है विषयोंमें मन लुभायके गाफिल क्यूं होया है टेर रिपु राग द्वेश जानले निज भिन्न धर्म मानले तज मान मोह लोभ कूं क्यूं तन विगोया है १ भज नाम जिनेश का कल्याण हो हमेश का भवसिंधुमें जहाज है त्रिभुवन को मोया है २ जिन धर्म धारलीजिये जिन गुण का पान कीजिये यू कहै यू चोथमल क्यूं मायामें मोया है ३॥

२ नगालीकी टेर

चेतन थे क्यूं भुल्या ज्ञान तज अभिमान मद टारो टेर तज द्यो राग द्वेष दुखदाई ॥ नाहक करते मान वडाई नरगति महा कष्टसे पाई हिरदे जिन मत को धारो १ तन धन जोवन थिर मत जानू ममता धर क्यूं अपना मानू नाहक सपन देख लुभानू झुंट सपना ज्यूं टारो २॥ ज्यो जिन चरणा शीश नवावो मन वच तन प्रभु के गुण गावो तो तुम स्वर्ग मोक्ष सुख पावो वसु रिपु कर्मों को टारो ३॥ चोथमल निज मन को समझावे॥ जो तोय सुख संपत धन चावे प्रभु के शरणा क्यूं नहिं आवे जगसे होवे निस्तारो॥ ४॥

टालगालीकी टे५

जिया झूंटा जगत को जानूं विषय भोग तज प्रभु पद भज भज कर्म कलंक नसानूं टेर तन धन जोवन देख लुभाया है यह सब सपने की माया विनसत ज्यूं बद्दल की छाया ममता

धरत्यूं ज्ञान भुलाया फ्यौ जिनका तू निशदिन घड़िपल ध्यान धारत्यूं अघ हानी १ सुख ज्यों चाहो जिन मत धारो ध्यान धार वस [illegible] री राग द्वेष मद ममता टारो माया मिथ्या चार नैवारो स्याधार मन वचनन निशदिन जीवन कभी सतानू २ ओसबिन्दु सम संपतिनेरी विनसत लगै न पल भर देरी कौलवान यह हित की हेरी नरगति पाय समदन्यूं गेरी चौथ मल्ल तू निज पर हितकर यह अवसर नहिं आनु जिया भूदा ३॥

संसार भावना ८५

करम महा बलवान सुनिये एक कहानी निश्चल मन को धार सार लखिये बहु ज्ञानी एक सिकारी कीर तीर लेवन में आयो हाथ न आयो जीव सर्व दिन भ्रमत गमायो सांझ समय जल तीर वृक्ष पै बैठो वोड़ सिकारी दैवयोग वहां एक आयो [illegible] वनचारी जलपीवन मृग देख पारधी बांण उठायो मृग जान्यो निज काल वचन अति दीन सुनायो ॥ करुणा करिये नाथ अरजी सुनिये मेरी पुत्र भयो मेरे आज प्रसूती हिरणी मेरी उनको आयो छोड़ वचन कहतुम पै आउ ॥ करिये फिर सिकार घड़ी दोय जीवन पाउ बोलो मृग से भील गभिणी घर में नारी भोजन घर में नाहिं कलस्यूं मेरी ख्वारी मरले को जग माहिं गये फिर आवत नाहीं तू है मृग पशु की जात प्रतिज्ञा जानत नाहीं बोलो मृग सुन नाथ प्रतिज्ञा सत्य निभाउ ज्यों नहिं आउ पास कुगति गति निश्चय पाउ चाल्यो मृग कर कौल दोड़ निज घर पै आयो घर पर [illegible] रणी नाहिं अकेलो बालक पायो बालक पेर आनि अप उठाकर कल लगायो बालक को ले गोद हिरणी हेरन आयो

हिरणी पीवनीर तीर जल यहांही आई ॥ देखवधिक सिकार तीर अत्यंचा चढाई ॥ हिरणी कहै सुननाथ करजोर सुनिये अरजीमेरी ॥ बालक दूध पिलाय तुरत आउ मैं तेरी ॥ मेराप ति घर नाहिं भोजनको ले वन आया ॥ ढूंढत फिर वन मांहि मु- झको अनहुं न भाया ॥ बालक भूखा छोड़ निर्दई मैं यहां आई हुकम करो अब मोय आउ दूध पिलाई ॥ कहै पारधी भोल- भूं हिरणी क्यूं बोले ॥ गयो कोल कर एक वनमें वो मृगडो ले ॥ मानूं अब न करार हिरणी तूं है नारी ॥ छोड़दई शिकार मो सम कौन अनारी ॥ हिरणी कहै सुन नाथ सांची सोगन- खाउ ॥ ज्यो न आउ पास तो मैं नरका जाउ ॥ यूं कहै हिरणी आय बालक घर नाहिं देख्या ॥ पड़ी मूरछा खाय करै मनही मन लेखा ॥ हाय कहा अब पूत कोई जंतु खाया ॥ अति लोभी भर्तार घर अब तक नहीं आया ॥ अहो मोह बलवान जगकी अद्भुत माया ॥ कौन पुत्र पति भ्रात मन सपनाज्यूं भुलाया ॥ हृदय धरूं भगवान देह को तुरत तजूंगी ॥ नाहिं प्रतिज्ञा छो ड़ सत्य मन माहिं धरूंगी ॥ यूं मन हिरणी धार मारग देखन लागी ॥ पति देख्यो शर जाल रोकन उनको भागी ॥ हे पति सुन प्रिय बात ताल पर तुम मत जावो ॥ वहां पारधी की अपना आशा बचावो ॥ सोपो बालक मोय दूध पाय घर ले जावो ॥ रै न दिवस रख पास अब जस को तुम ही जीवावो ॥ हे बालक पि वो दुग्ध फेर मैया नाहिं पावै ॥ मैया मातु बाप कंद धर गोद खिलावै ॥ यूं कहै हिरणी रोय पति को बालक सोप्या ॥ और करो अब नार काल मेरे पर कोप्या ॥ बोला हीरण बात सुणा हिरणी मेरी राणी ॥ करम महा बलवान करमकी गति नहिं जानी ॥ तुम जावो घर मांय संग बालक ले जावो ॥ मात पुत्र-

दोजीव सुखसे दिवस गमावो ॥ अहो पुत्र सुन वान मातासौ
आत्तारसिखयो ॥ रैनदिवस सवकाल पितासम ममनारखियो ॥
आवो पुत्र मेरे पास फेर तोप कहलगाऊं ॥ जेः वे पारधी वारअव
मे उनपै जाऊं ॥ यू कहै वो मृगदीन पुत्र नज चालन लाग्यो ॥ तु
म हिरणी कहां जान मानि ज्ञा मेरे मनमे ॥ तुम मृत्य अपनी निषा
प मे हद मेरे मरणमें ॥ मरणके पूरण काज तुम हम दोनू आवे ॥
सुनहु पारधी वीर अव क्यों देर लगावो ॥ मृगा हिरणी अेस पुत्र
पारधी दृढ सव देखा ॥ लाग्गिन श्रो मन माही ज्ञान निज घटका
पेखा ॥ धृक २ जगमे मोप जीवां है माको आया ॥ धन्य पशु मृ
ग तोप धर्म सच्चा दरसाया ॥ मैं नौहे मारूं तोय तूहे सद् गुरु मेरा
हुवा ज्ञान अव ग ॥ [illegible] अंधेरा ॥ तूहे मृग पशु कौ ज्ञात ध
र्म को अति दृढ जान्या ॥ मैमानव तन धार धर्म का मर्म न जान्या
॥ हुवा अव परमान गुरो पै दिना थारू ॥ तप संयम धर ध्यान म
हा रिपु कर्म पछारू ॥ चेतन पूछ तोप पारधी मृग जग को है ॥
सत गुरु कह सुनू ज्ञान दृष्टान दृष्टान्त जगमे मोहे ॥ यह सं
सारी जीव जगमे मृग भ्रम डोलै ॥ माया हिरणी साथ ममत्व मु
तसे मन खोलै ॥ भवसागर जल तीर पारधी काल खड़ो है धर्म
मनिसासत्य धर्म सव से ही वड़ो है ॥ याते गहिये धर्म कर्म रिपु
नाशन कारण ॥ नैय्या सम जग माहि धर्म भव सिंधु उवारन ॥
चोथमल्ल गिरनाप मराणमें श्री जिनवाणी करस्या वखान

इति श्री
चतुर्थमलजी कृत पद्दलाऽध्याय
सम्पूर्णम्